हर हर गंगे

(गोमुख से गंगासागर)

हर हर गंगे

निर्मल गंगा जन अभियान

पाँच प्रयास – पाँच परिणाम

जल शुद्धि - निर्मल गंगाजल

तट शुद्धि - हरे भरे स्वच्छ तट

तटीय ग्राम शुद्धि - आदर्श ग्राम तीर्थ

सच्चा तीर्थ सेवन - तीर्थ गरिमा की रक्षा

दूषित जल स्त्रोत प्रबंधन - स्वच्छ सदा नीरा गंगा

गंगा संवाद - माँ गंगा की कथा-व्यथा

कार्यक्रम विवरण

कार्यक्रम स्थल

दि.....	सायं 6.00 से 8.30	गंगा महात्म्य
दि.....	प्रातः 7.00 से 8.00	गंगा अभिषेक, आरती
	9.00 से 12.00 एवं	
	दोप 2.00 से 4.30	जन संपर्क
	सायं 6.00 से 8.30	गंगा की कथा-व्यथा
दि.....	प्रातः 7.00 से 8.00	गंगा अभिषेक, आरती
	9.00 से 12.00 एवं	
	दोप 2.00 से 4.30	जन संपर्क
	सायं 6.00 से 8.30	निर्मल गंगा दीपयज्ञ एवं गंगा सभा

निवेदक : **अखिल विश्व गायत्री परिवार**

संपर्क सूत्रः

सोचो.....! समझो.....! और उचित करो....!!

न करने योग्य :

- घर की कचरा युक्त पूजन सामग्री, बासी फूल गंगा में न डालें।
- तट पर पॉलीथीन का प्रयोग न करें।
- घाट पर नहाने एवं कपड़े धोने का साबुन प्रयोग न करें।
- गुटका एवं शेम्पू पाउच न फेंके।
- तटों और घाटों पर मल-मूत्र का त्याग न करें।
- प्लास्टर ऑफ पेरिस की बनी एवं जहरीले रंगों से रँगी प्रतिमाओं का विसर्जन गंगा में न करें।
- तटीय खेतों में रासायनिक खाद, कीटनाशक का प्रयोग न करें।
- मल-मूत्र युक्त पानी गंगा में प्रवाहित न होने दें।
- शहर का गंदा नाला एवं उद्योगों का गंदा-जहरीला पानी प्रवाहित होने से रोकें।
- प्लास्टिक के दोनों में दीप दान न करें।
- मृत पशु, शव, अधजले शव गंगा में प्रवाहित न करें ।

करने योग्य :

- घर की पूजन सामग्री, बासी फूल एवं अन्य सामग्री की खाद बनाएँ।
- पॉलीथीन के स्थान पर कागज के बैग उपयोग करें।
- मल-मूत्र हेतु शौचालयों का प्रयोग करें।
- पर्यावरण अनुकूल मूर्तियों की ही स्थापना करें।
- रासायनिक खाद, कीट नाशक के स्थान पर गोबर, केंचुआ खाद एवं गौमूत्र से बने कीटनाशक का प्रयोग करें।
- गंदे पानी के सोक पिट (सोख्ता गड्ढा) बनाएँ।
- अच्छा हो आटे के दिये बनाकर घाट पर ही दीपदान करें, जल में न बहाएँ या पत्ते के दोने उपयोग करें।
- शव दाह हेतु श्मशान घाट या विद्युत शवदाह गृह का प्रयोग करें ॥

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं, तीर्थ क्षेत्रे विनश्यति ।
तीर्थ क्षेत्रे कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति ॥

अर्थात्

अन्य क्षेत्र में किया पाप तीर्थ क्षेत्र में नष्ट हो जाता है, किंतु तीर्थ क्षेत्र में किया पाप अकाट्य होकर जन्म-जन्मान्तरों तक दुःखदायी होता है ।

गंगा को माता माना है, स्वच्छ रखेंगे यह ठाना है ।